कटोरा भर शान्ति

एक सत्य कथा

लेखनः कैरन स्टैलसन

चित्रः अकीरा कुसाका

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

दूसरा विश्व युद्ध जारी था और जंग का शोर-शराबा नागासाकी के पास आता जा रहा था, जहाँ साचिको और उसका परिवार रहता था। साचिको के माता-पिता ने परिवार को महफ़ूज़ रखने के लिए वह सब किया जो वे कर सकते थे। पर आगे जो घटा उसकी कोई तैयारी उनकी नहीं थी।

9 अगस्त 1945 को नागासाकी पर एक परमाणु बम फूटा। अन्य परिवारों की तरह साचिको के परिवार ने भी बेहिसाब नुकसान और तबाही का सामना किया। नष्ट हो चुके घर के मलबे से साचिको के पिता को पत्ते के आकार में बना एक कटोरा मिला, जो घर के तहस-नहस हो जाने के बावजूद बिलकुल साबुत था, बिना किसी टूट-फूट या दरार के। पीढ़ियों से चले आ रहे इस कटोरे ने साचिको के परिवार को न केवल उसके अतीत से जोड़े रखा बल्की भविष्य के लिए उम्मीद भी जगाए रखी।

कैरन स्टैलसन के संवेदनशील शब्द और अकीरा कुसाका के जीवन्त चित्र युद्ध के विध्वंस को समेटने के साथ सभी उम्र के पाठकों को एक शान्तिपूर्ण दुनिया की झलक भी दिखाते हैं।

कटोरा भर शान्ति

एक सत्य कथा

लेखनः कैरन स्टैलसन

चित्रः अकीरा कुसाका

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
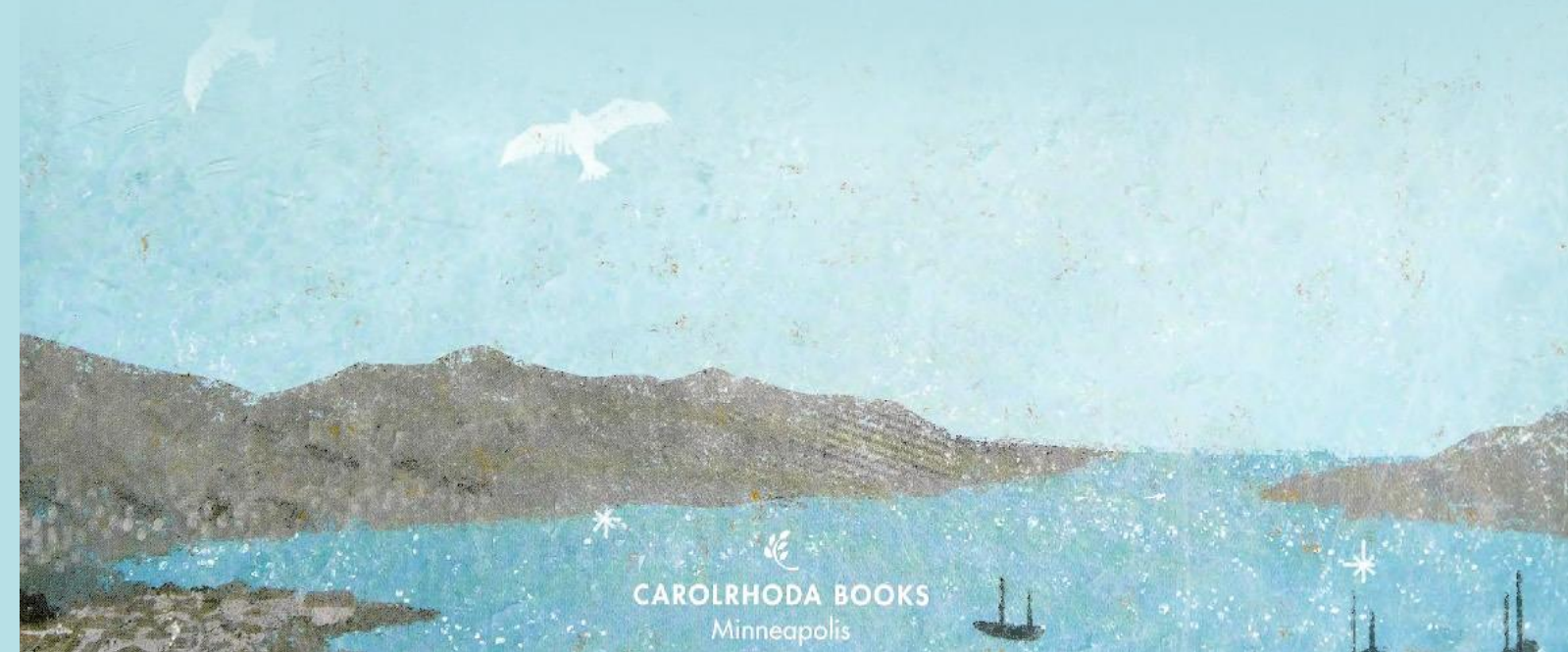
इतादाकिमासु

भोजन शुरु करने के पहले कहा जाने वाला परंपरागत जापानी शब्द, जिसका मतलब होता है, ‘‘हम विनम्रता से प्राप्त कर रहे हैं’’।

कोई नहीं जानता कि नानी का यह कटोरा कितना पुराना है।

कोई नहीं जानता कि इसे किसने बनाया था।

कोई नहीं जानता कि इस कटोरे को कितनी बार

माँ द्वारा अपनी बेटी को दिया गया है।

पर यह सब जानते हैं कि वह बेशकीमती है।

नागासाकी शहर जापानी समुद्र के किनारे बसा है। बन्दरगाह के गिर्द ऊँचे पहाड़ उठे हुए हैं। पहाड़ों की ढलान पर लकड़ी से बने घर अपनी कागज़ की खिड़कियों समेत बिखरे हुए हैं। गर्म दोपहरियों को साचिको और उसके भाई आकी और इचिरो गर्मियों कर गीत गाते पतिंगों और झींगुरों का पीछा करते हैं।
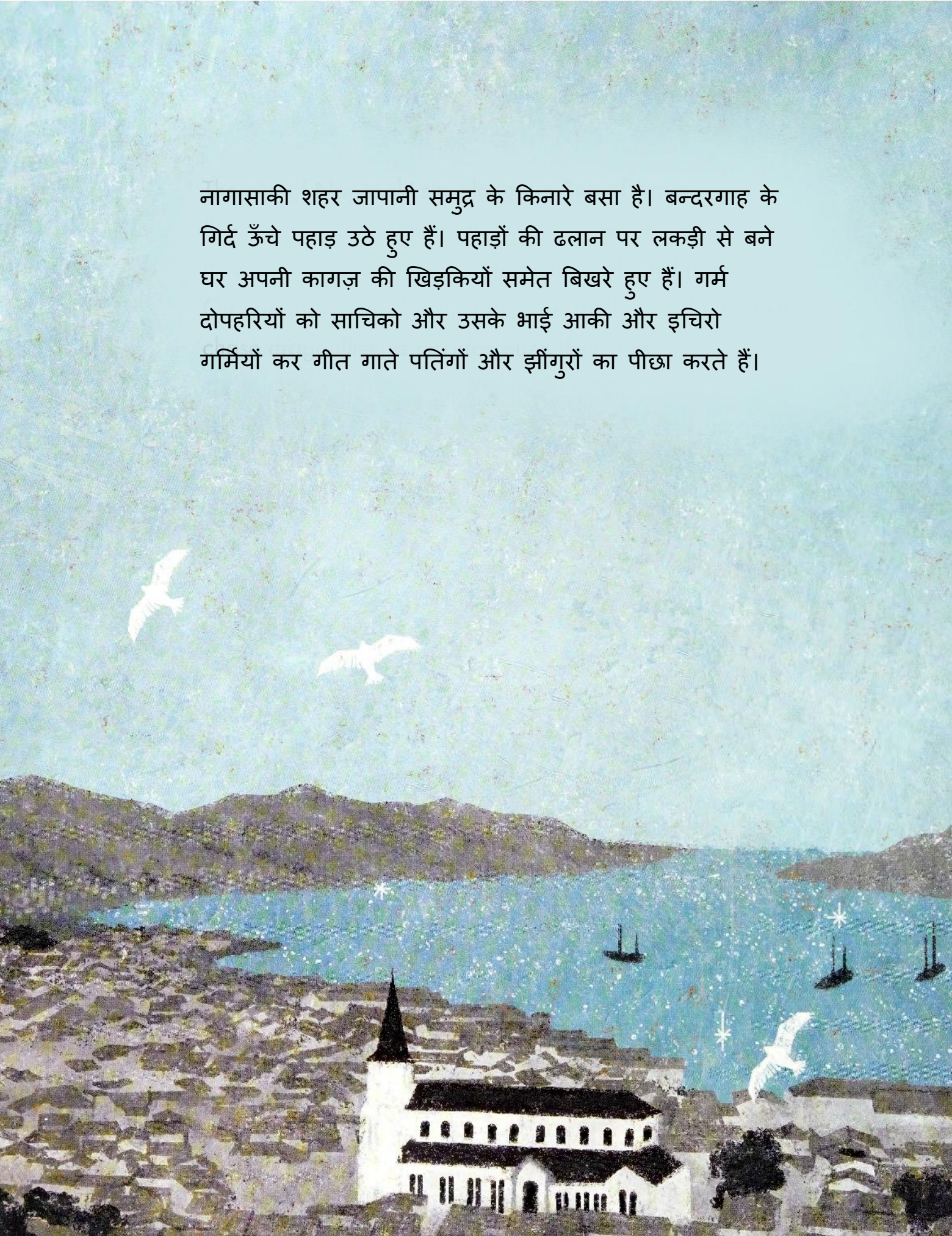
शाम को साचिको का पूरा परिवार साथ होता है।
माँ, नानी के कटोरे को नीची मेज़ के बीचों-बीच रखती है।
हमेशा की तरह कटोरा उम्दा चीज़ें पेश करता है -
विद्रूप (स्क्विड), सर्पमीन (ईल), अष्टबाहु (ऑक्टोपस) और गेहूँ के आटे से बने उडॉन नूड्ल्स।
साचिको को परिवार के सभी सदस्य हाथ जोड़ सिर झुकाते हैं
और फुसफुसा कर कहते हैं

इतादाकिमासु।

साचिको के बड़े होते जाने के साथ जंग का शोर-शराबा नागासाकी तक आ पहुँचता है।

टौरपीडो बनाते हथौड़ों की धमाधम,

जंग की तैयारी करते सैनिकों की कदमताल,

और जिन लोगों के पति, पिता और भाई युद्ध में मारे गए,

उनका विलाप।

साचिको के लिए जंग का मतलब है हर चीज़ की क़िल्लत।

अब नानी के कटोरे में झोल में तैरती कुछ छोटी समुद्री मछलियाँ भर होती हैं।

पर कम-से-कम परिवार अब भी साथ-साथ है।

छोटी बहन मीशा और नन्हा तोशी भी हाथ जोड़ कर कहना सीख गए हैं,

इतादाकिमासु!

युद्ध की आवाज़ें अब और पास सुनाई देने लगी हैंः

पहाड़ की ढलान में हवाई हमले से बचने के लिए आश्रय खोदते लड़कों और लड़कियों के हाँफने की आवाज़ें, हवाई हमले की चेतावनी देने वाले साइरनों की चीखें, आसमान में उड़ने वाले दुश्मनों के बमबारी करने वाले हवाई जहाज़ों की शहर में गूंजती घड़घड़ाहट।

साचिको स्कूल खुलने का बेसब्री से इन्तज़ार करती रही थी। पर स्कूल खुलने के एक ही दिन बाद बन्द भी हो गया।

"हालात बेहद ख़तरनाक हैं," प्रधानाध्यापक ने आकाश को ताकते ऐलान कर दिया।

साचिको का परिवार अब भी रात का खाना खाने साथ बैठता है।

पर अब नानी के कटोरे में उबले पानी में सिर्फ़ आटे के गोले तैरते हैं।

माँ कहती है, "सब कुछ खा लेना बच्चों। हरेक निवाला बेशकीमती है।"

साचिको का परिवार हाथ जोड़ता है ओर सिर झुकाता है, और तब कहता है,

इतादाकिमासु।

गर्मियाँ फिर लौटती हैं। अगस्त का झुलसता महीना आता है।
9 अगस्त को साचिको के पिता अपने एक बीमार दोस्त से मिलने जाते हैं।
माँ नाश्ते की तैयारी कर रही है।
आकी, इचिरो और साचिको नीची मेज़ के गिर्द बैठे इन्तज़ार कर रहे हैं।
मीसा और नन्हा तोशी भी वहीं हैं।

अचानक हवाई हमले की चेतावनी देने साइरन बज उठता है।
सब बचाव के लिए आश्रय की ओर भागते हैं।
वे सब कुछ वहीं छोड़ जाते हैं -
नानी का कटोरा भी।

वे अपने पड़ौसियों के साथ गुफा में एक-दूसरे से चिपके बैठे हैं।

वे मना रहे हैं कि ऊपर आकाश से कोई बम न गिरे।

आख़िरकार साइरन फिर बजता है, यह बताने कि ख़तरा टल गया है।

सब राहत की साँस लेते हैं।

बाहर साचिको के दोस्त पूछते हैं कि क्या वह घर-घर खेलना चाहेगी।

साचिको हाँ कहती है। वह और उसके दोस्त हंसते हैं।

वे अपने छोटे-छोटे हाथों से मिट्टी के डम्पलिंग बनाते हैं।
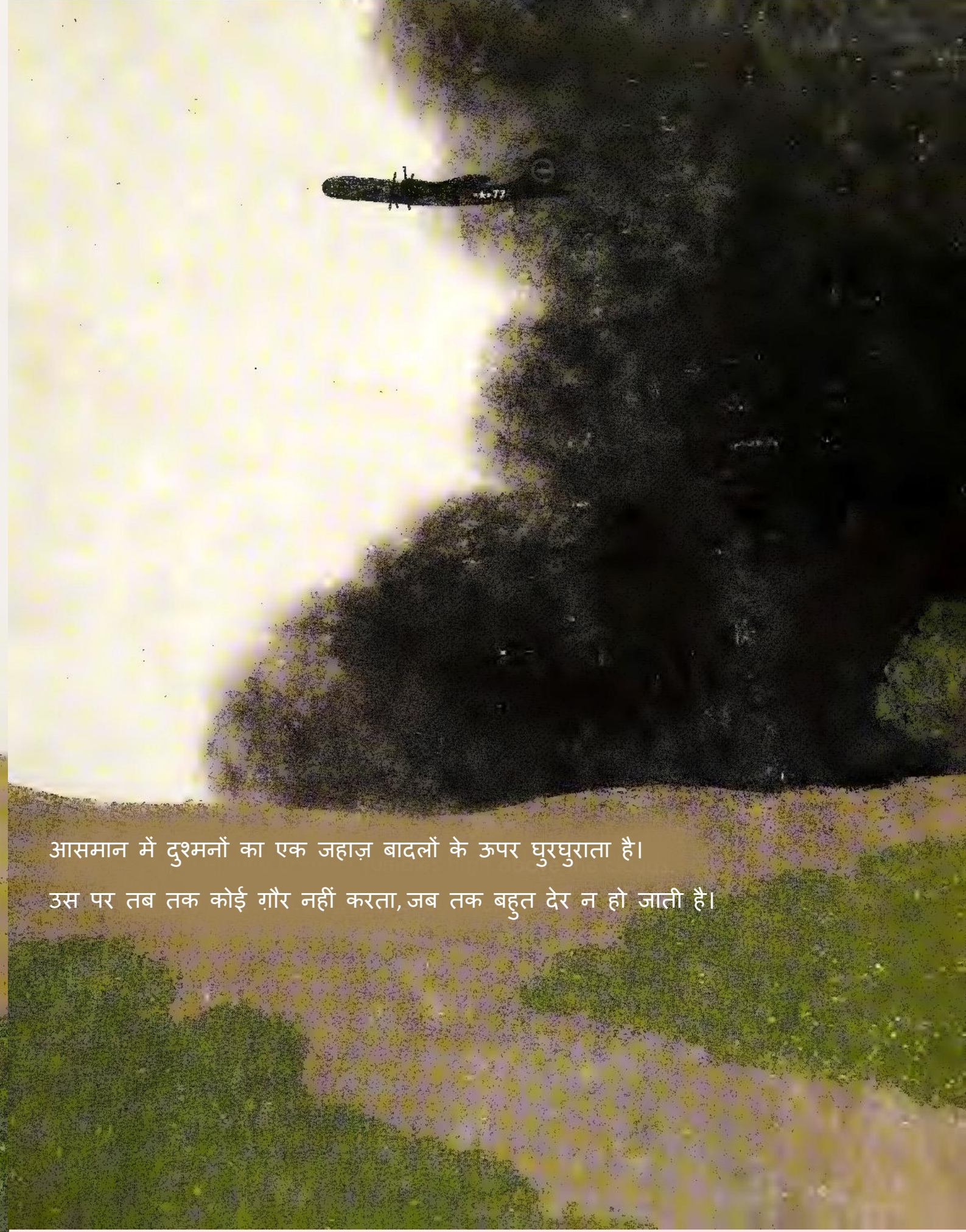
आसमान में दुश्मनों का एक जहाज़ बादलों के ऊपर घुरघुराता है।

उस पर तब तक कोई ग़ौर नहीं करता, जब तक बहुत देर न हो जाती है।

साचिको फटी आँखें से अपने चारों ओर देखती है।

आखिर हुआ क्या?

पिता, माँ, साचिको और मीसा बच जाते हैं।

भाई आकी और इचिरो भी।

पर नन्हा तोशी नहीं।

वह मारा जाता है।

पूरे दिन और देर रात तक शहर भर में जगह-जगह आग सुलगती रही है।

अगली सुबह, बहुत जल्दी ही पिता फैसला करते हैं।

“हमें नागासाकी छोड़ना होगा। एक रेलगाड़ी हमें शहर से दूर ले जाने आ रही है।

हमें फौरन निकलना होगा। सब मेरे साथ चलो।”

हर ओर तड़पते लोग दिखाई देते हैं।

“मुझे बड़ी प्यास लगी है,” आवाजें फुसफुसाती हैं।

“पानी, मेहरबानी से, मेहरबानी से पानी!”

नागासाकी से दूर एक छोटे अस्पताल में,

सचिको के भाई बीमार हैं।

कोई समझ नहीं पा रहा क्यों।

कोई यह समझ नहीं पा रहा कि यह सब परमाणु बम के विकिरण से हो रहा है।

आकी की मौत हो जाती है।

तब इचिरो की भी।
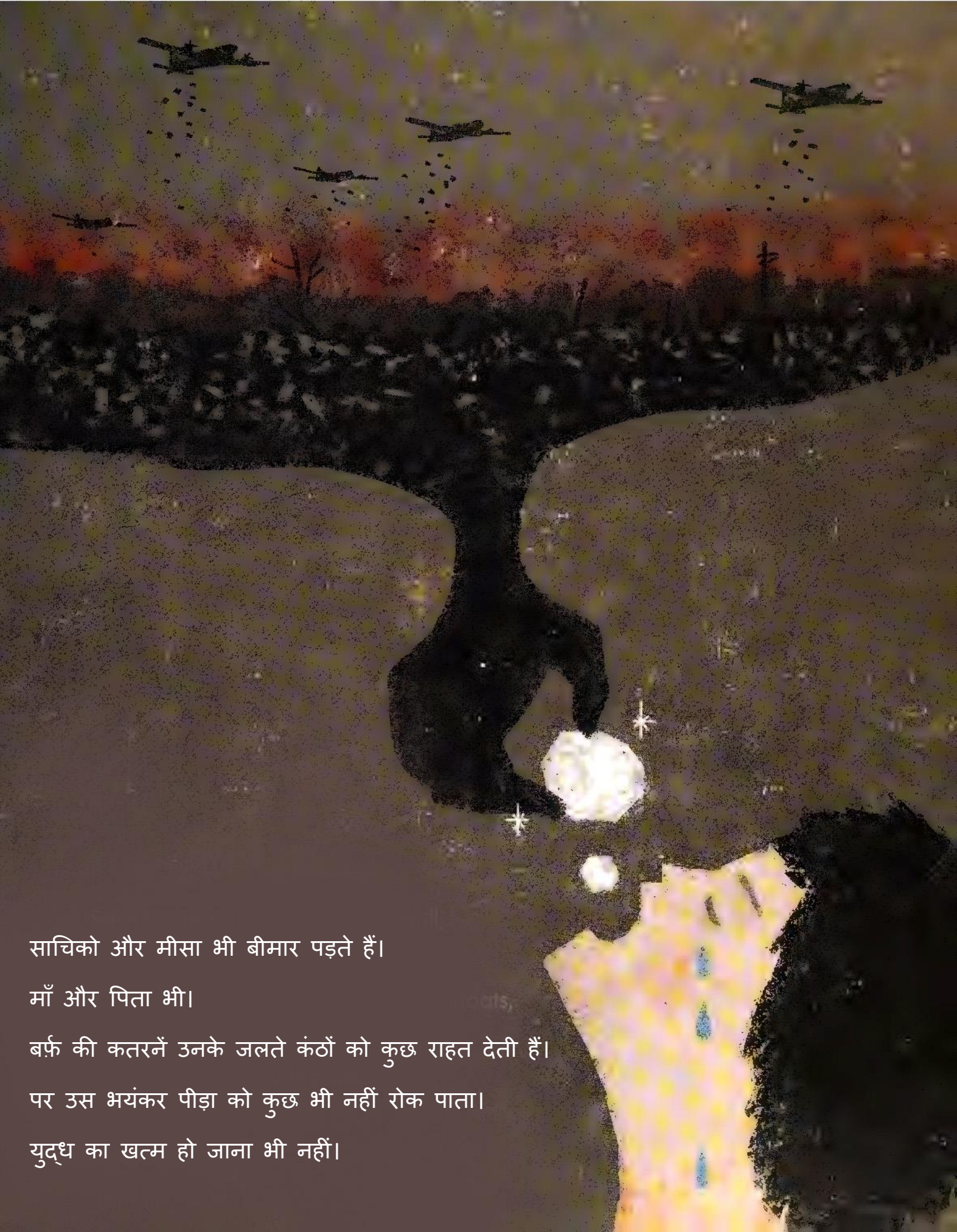
साचिको और मीसा भी बीमार पड़ते हैं।

माँ और पिता भी।

बर्फ़ की कतरनें उनके जलते कंठों को कुछ राहत देती हैं।

पर उस भयंकर पीड़ा को कुछ भी नहीं रोक पाता।

युद्ध का खत्म हो जाना भी नहीं।

दो साल गुज़रने के बाद ही
साचिको का परिवार नागासाकी लौटता है।
साचिको के पिता उस मलबे को खोदते हैं
जो कभी उनका घर हुआ करता था।
धूल-माटी के बीच कुछ दमकता है,
कुछ जो हरा और चमकदार है।
नानी का कटोरा!
वह बिना टूटे, बिना एक भी दरार के बच गया है!

साचिको के परिवार में हरेक सदस्य की उंगलियों ने उस कटोरे को छुआ है।
सबने उसमें से खाया है -
आकी, इचिरो और तोशी ने भी!
रात के खाने के समय साचिको की माँ
उस बेशकीमती कटोरे को लकड़ी के एक खोखे के बीचों बीच रखती है।
सचिको और उसका परिवार हाथ जोड़ता है,
सब सिर झुकाते हैं, और कहते हैं
इतादाकिमासु।

जब झिंगुर गर्मियों का गीत गाने लगते हैं,

एक बार फिर 9 अगस्त आता है।

सुबह-सुबह साचिको का परिवार लकड़ी के खोखे

के सामने घुटने टेक बैठता है।

इस बार साचिको की माँ ने

नानी के कटोरे को बर्फ़ से भरा है।

माँ आहिस्ता से बोलती है,

"इस दिन जो हुआ हमें उसे भुलाना नहीं चाहिए।

याद है कि बर्फ़ की कतरनों ने हमारी प्यास कैसे बुझाई थी?

इस बर्फ़ के पिघलने के साथ हम उन सबको याद करें

जिन्होंने पीड़ा झेली, जो मारे गए। हमें दुआ करनी चाहिए कि

ऐसी भयानक जंग फिर कभी न हो।"
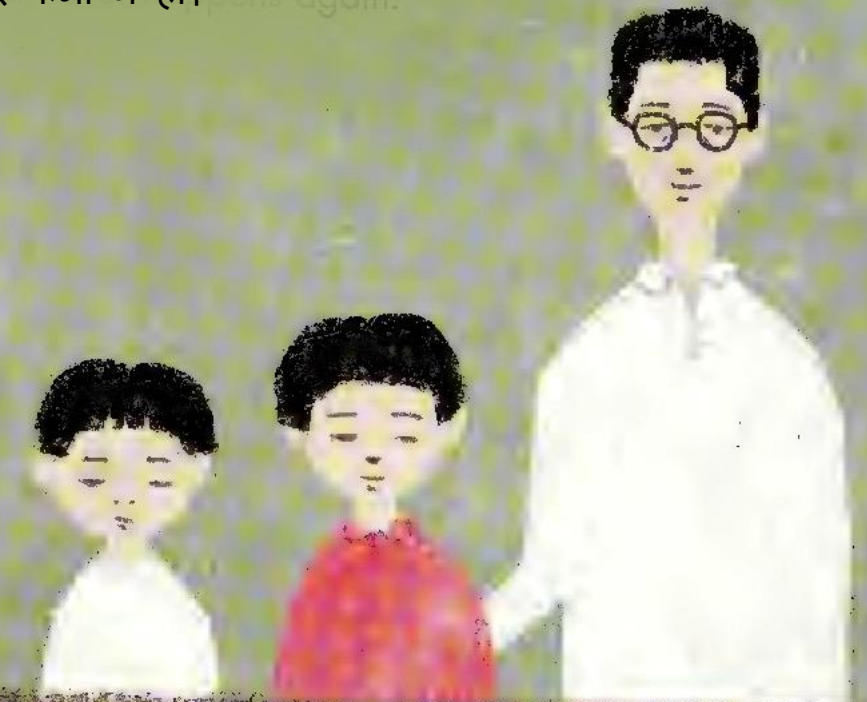
पाँच साल गुज़रते हैं।

बम का विकिरण

और-और लोगों को बीमार करता जा रहा है।

साचिको की बहन मीसा बीमार पड़ती है

और उसकी मौत हो जाती है।
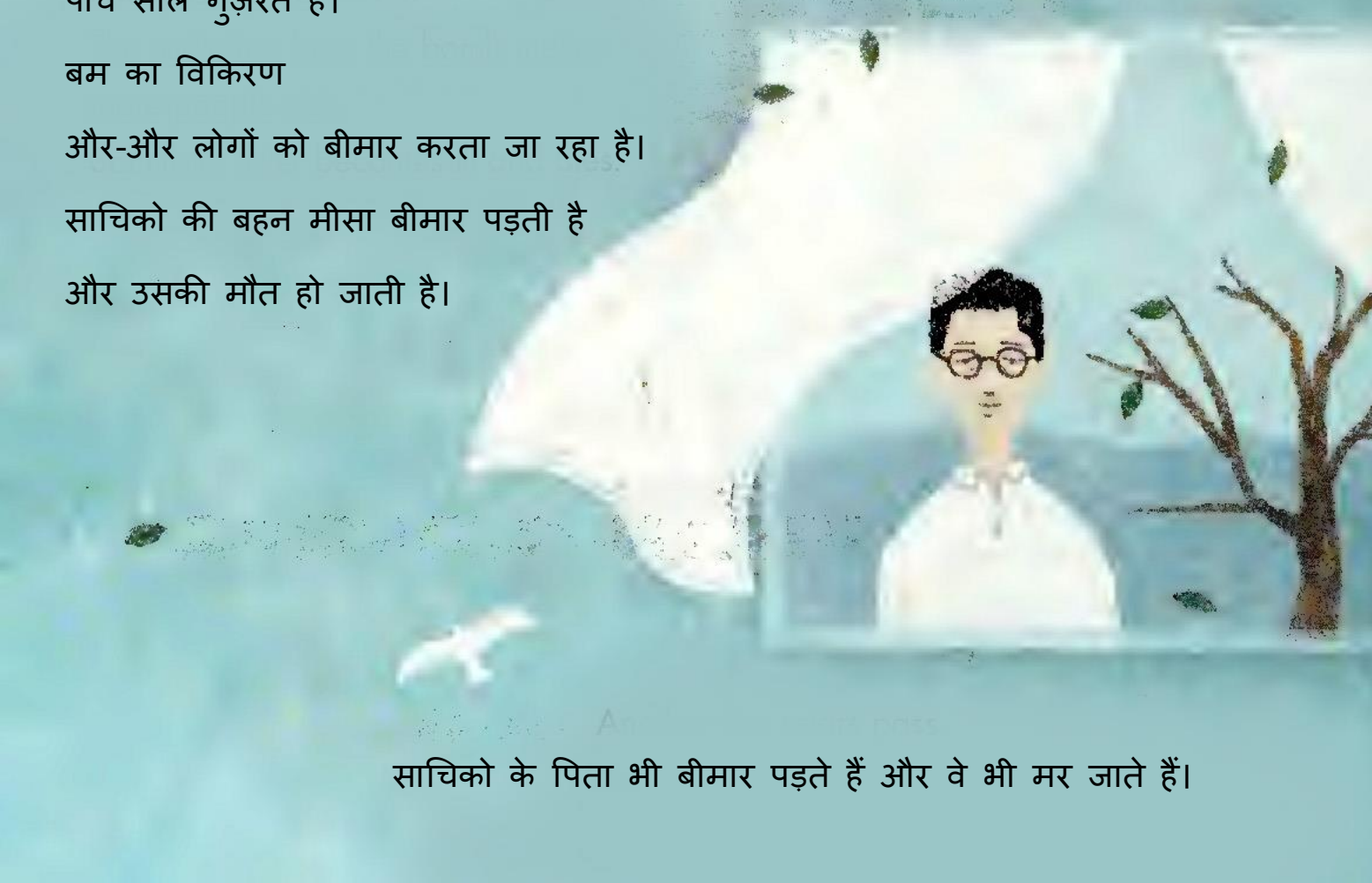
साचिको के पिता भी बीमार पड़ते हैं और वे भी मर जाते हैं।

हर अगस्त साचिको की माँ नानी के कटोरे में बर्फ़ रखती है।

साचिको और उसकी माँ, साथ-साथ बर्फ़ को पिघलते देखते हैं।

जो कुछ घटा था उसे याद करते हैं।

वे साथ-साथ शान्ति के लिए दुआ करते हैं।

तब साचिको की माँ भी बीमार पड़ती है,

और उसकी भी मौत हो जाती है।
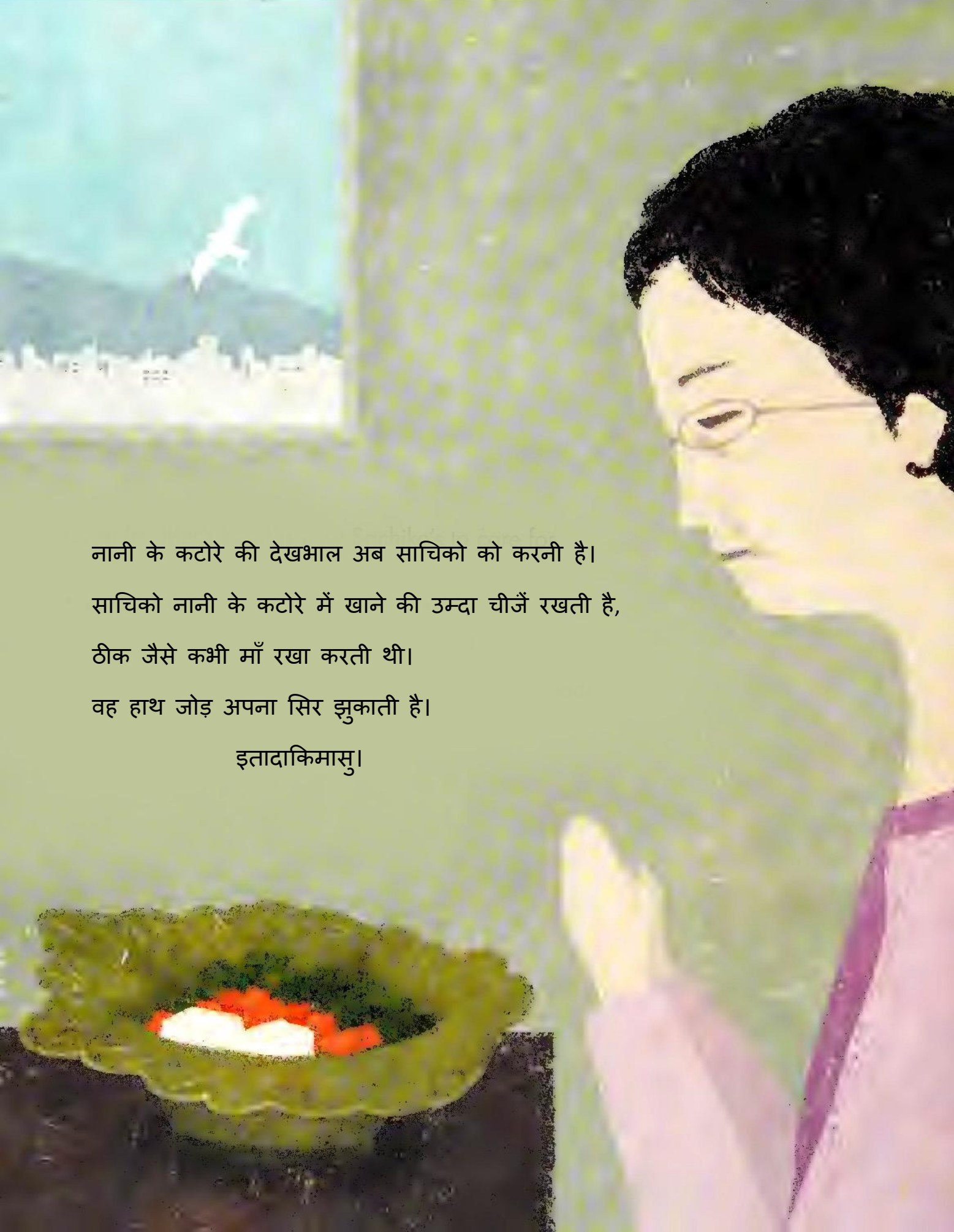
नानी के कटोरे की देखभाल अब साचिको को करनी है।
साचिको नानी के कटोरे में खाने की उम्दा चीजें रखती है,
ठीक जैसे कभी माँ रखा करती थी।
वह हाथ जोड़ अपना सिर झुकाती है।
इतादाकिमासु।

युद्ध खत्म होने के पचास साल बाद, 9 अगस्त को
सचिको नानी के कटोरे को बर्फ़ से भरती है।
उसके साथ जो कुछ भी हुआ था उस बारे में अब वह चुप नहीं रह सकती।
उसे अपनी कहानी कहनी ही होगी।
दुनिया को यह जान लेना ही होगा कि ऐसे बम का
कभी इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

उस शाम साचिको बच्चों के एक समूह के सामने खड़ी होती है,
और पहली बार अपनी कहानी सुनाती है,
"जो कुछ मेरे साथ हुआ वह सब तुम्हारे साथ कभी भी नहीं होना चाहिए।
और बच्चे ध्यान से सुनते हैं।
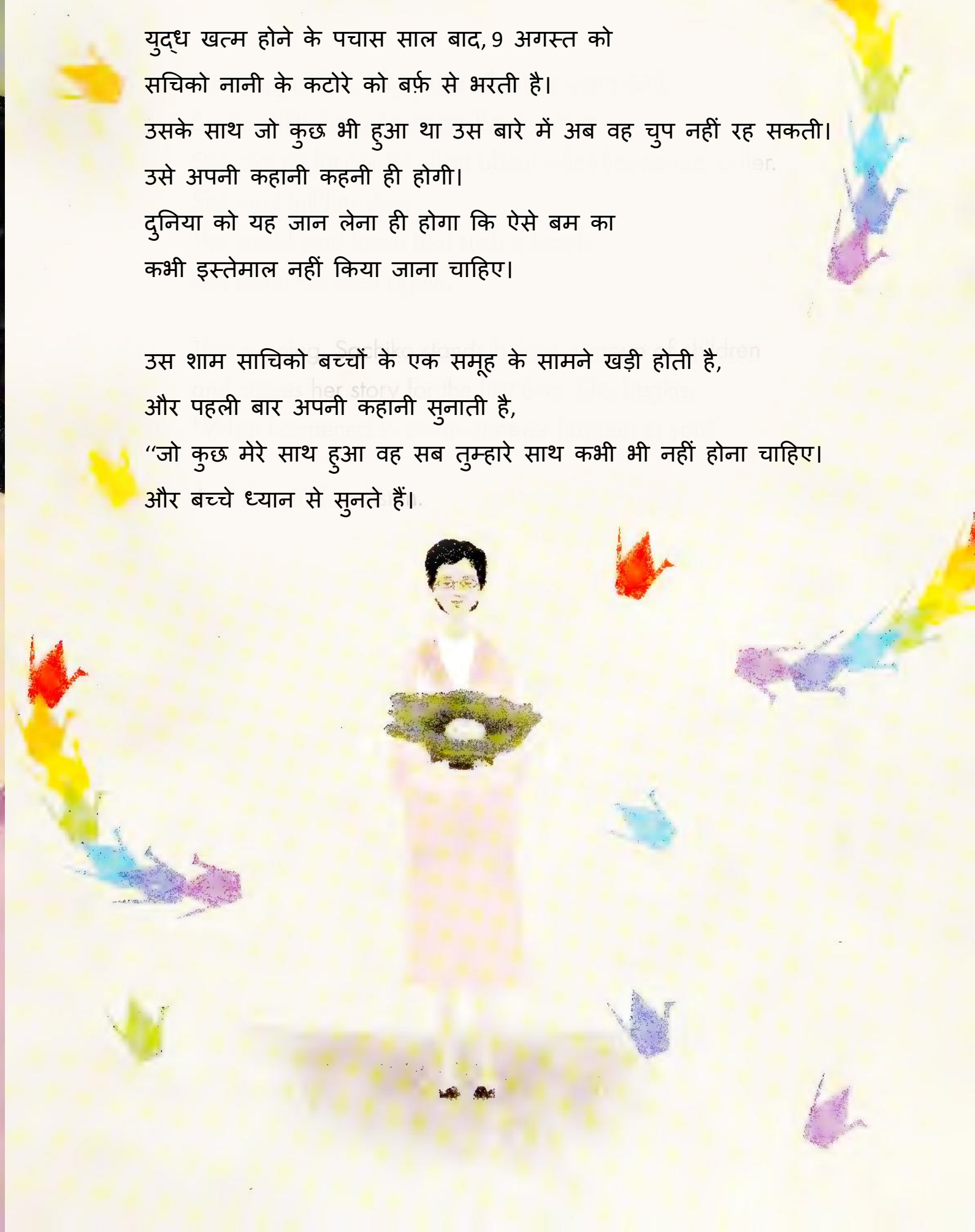
लेखिका की कलम से

इस पुस्तक की कथा कई सालों से मेरे दिल के क़रीब रही है। 2010 और 2015 के बीच मैं पाँच बार नागासाकी गई, और हर बार कई-कई घंटों तक साचिको यासूई का साक्षात्कार किया। ये साक्षात्कार मैंने अपनी क़िताब *अ नागासाकी बॉम्ब सरवाइवर्स स्टोरी* के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के उत्तरजीवी के रूप में साचिको के अनुभवों को जानने के लिए किए थे। जितना अधिक साचिको ने अपनी नानी के कटोरे के बारे में बताया उतना ही ज़्यादा मुझे लगने लगा कि नानी के कटोरे की अपनी भी एक कहानी है।

9 अगस्त 1945 को जब नागासाकी पर परमाणु बम गिराया गया था साचिको महज़ छह साल की थीं। वे अपने दोस्तों के साथ विस्फोट स्थल से केवल 900 मीटर की दूरी पर खेल रही थीं - विस्फोट में उनके सभी दोस्त मारे गए। शहर की सारी इमारतें ध्वस्त हो गईं, मय साचिको के घर के। साचिको के परिवार को कुछ समय के लिए नागासाकी छोड़ना पड़ा। जब वे वापस लौटे, साचिको के पिता को मलबे में नानी का कटोरा मिला। वह न टूटा था, न उसमें एक दरार तक पड़ी थी। साचिको ने बताया कि उस कटोरे पर उसके परिवार के हरेक सदस्य के उंगलियों के निशान थे। जंग, मौत और बेइन्तहा पीड़ा के बावजूद नानी का कटोरा परिवार को एक बार फिर से साथ जोड़ सका।

ऊपर बाएं से दाएं - साचिको पाँच वर्ष की उम्र में। साचिको की नानी शिशु इचिरो को पकड़े, नन्हा आकी अपनी एक मासी के पास खड़ा है। नीचे साचिको जापानी विद्यार्थियों को अपनी कहानी सुनाते हुए, उनमें से कई ऑरेगामी से बने सारसों की लड़ियाँ थामें हुए हैं जो शान्ति का प्रतीक हैं।

इस कहानी को ठीक से सुनाने में मदद पाने के लिए मैंने *इतादाकिमासु* शब्द को शामिल किया है। इस शब्द की जड़ें जापानी बौद्ध धर्म में हैं और इसका अर्थ है "मैं विनम्रता से प्राप्त करती/करता हूँ।" जापान जाने पर मैंने कई बार साचिको के साथ खाना खाया - अक्सर ताज़ी मछली, सर्पमीन, ऑक्टोपस और ऊडॉन नूडल्स। खाना शुरू करने के पहले हम जोड़ते, और सिर झुका कर फुसफुसा कर *इतादाकिमासु* कहते। मैंने इस शब्द के बारे में पढ़ा और उसके व्यापक अर्थ को समझाः मैं उन सबके प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस भोजन को संभव बनाया है। *इतादाकिमासु* के केन्द्र में आभार की, शुक्रगुज़ारी की भावना है। मैं साचिको के साथ दोस्ती के लिए तहेदिल से आभारी हूँ। उसने मुझे *हिबाकुशा* यानी परमाणु बम के उत्तरजीवी के रूप में जी पाने की शक्ति के बारे में; शान्ति का पथ तलाशने के दृढ़ संकल्प के बारे में; और परमाणु युद्ध के चश्मदीद गवाह के रूप में अपनी कहानी कहने के साहस के बारे में सिखाया है।

द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) के दौरान लड़ी गई प्रशान्त महासागर के युद्ध की हक़ीकत को पूरी तरह जाने बिना साचिको की जैसी कहानी कोई समझ ही नहीं सकता। प्रशान्त युद्ध सभी पक्षों के लिए मारक सिद्ध हुआ - मित्र राष्ट्रों (जिसमें संयुक्त राज्य अमरीका भी शामिल था) के लिए और अक्ष राष्ट्रों (जिसमें जापान शामिल था) के लिए भी। युद्ध समाप्ति की कगार पर था जब अमरीका ने जापान के दो शहरों पर परमाणु बम बरसाए। 6 अगस्त 1945 को यूएस बी-29 बॉम्बर *एनोला-गे* हिरोशिमा पर उड़ा और उसने जो परमाणु बम गिराया उसकी ताक़त 15,000 टन टीएनटी के बराबर थी। उस एक ही बम से 140,000 लोग मारे गए और शहर का 90 प्रतिशत भस्म हो गया। इसके तीन दिन बाद बी-29 बॉम्बर *बाकस्कार* ने नागासाकी पर दूसरा बम गिराया, जिसकी ताकत 21,000 टन टीएनटी के बराबर थी। इससे अंदाज़न 74,000 लोग मारे गए, जिसमें साचिको का सबसे छोटा भाई तोशी भी शामिल था। विस्फोट से हवा में उड़े काँच या धातु के कतरों से तमाम लोग मारे गए या गंभीर रूप से घायल हुए। कई दूसरे परमाणु विस्फोट के तीव्र विकिरण से मारे गए। इस बमबारी के कुछ ही समय बाद द्वितीय विश्व युद्ध तो समाप्त हो गया, पर परमाणु बम के उत्तरजीवियों का कष्ट और उनकी असहनीय पीड़ा का अन्त नहीं हुआ। आगे आने वाले महीनों और सालों में अनेकों उत्तरजीवी विकिरण से हुए रोगों और कैन्सर से मरते रहे।

अमरीका द्वारा हथियार के रूप में परमाणु बम के उपयोग ने दुनिया को हमेशा के लिए बदल दिया। हम जानते हैं कि परमाणु अस्त्रों का उपयोग भविष्य में कभी नहीं किया जाना चाहिए, पर इसके बावजूद आज भी हज़ारों की संख्या में परमाणु हथियार मौजूद हैं। आज के हथियार हिरोशिमा और नागासाकी को तबाह करने वाले बमों से कहीं अधिक ताकतवर हैं। 2017 में इन्टरनैशनल कैम्पेन टु एबॉलिश न्यूक्लियर वैपन्स (आईकैन) को संयुक्त राष्ट्र में परमाणु अस्त्र निषेध संधि पारित करवाने में उसकी भूमिका के लिए नोबेल शान्ति पुरस्कार से नवाज़ा गया था। जब तक परमाणु हथियार समाप्त नहीं होंगे मैं हर 9 अगस्त को अपने "नानी के कटोरे" को बर्फ़ से भरूंगी और यह कल्पना करूंगी कि साचिको की कहानी को जानने वाले अन्य लोग भी अपने-अपने "नानी के कटोरे" को भरेंगे। और जैसे-जैसे बर्फ़ पिघलेगी हम शान्ति के लिए दुआ करेंगे, शान्ति में विश्वास जताएंगे और दूसरों के हित में काम करेंगे।

कैरन स्टैलसन

चित्रकार की कलम से

मैं उस पीढ़ी की हूँ जिसने युद्ध को अनुभव नहीं किया।

युद्ध के बारे में हम जो जानते हैं वह हमने स्कूल की इतिहास कक्षाओं से जाना है। हमारी पाठ्यपुस्तकों में प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में, जापान ने जो कहर ढ़ाया और जो कष्ट झेला उसके बारे में बताया गया था।

नतीजतन हमारी पीढ़ी के कई लोग युद्ध को "पाठ्य पुस्तक की एक घटना" भर मान बैठते हैं। वे सोचते हैं कि यह सब किसी फिल्म या उपन्यास में होता है। मैं भी इन्हीं लोगों में एक हूँ। मैं युद्ध की भयावहता और परमाणु हथियारो के ख़तरे को तो समझती हूँ, पर यह नहीं कि वास्तविक ज़िन्दगियों में उसका कितना भयंकर असर होता है।

जब मुझे इस क़िताब को चित्रित करने का प्रस्ताव मिला मैं घबराई। मैंने सोचा कि जिसने युद्ध को अनुभव ही नहीं किया, क्या उसे इस तरह की कहानी को चित्रित करने की हिमाकत करनी भी चाहिए। पर साथ ही यह भी लगा कि ऐसी किसी कथा को चित्रित करने का मौका मुझे अपनी ज़िन्दगी में कितनी बार मिलेगा? तब यह लगा कि यह युद्ध के बारे में फिर से जानने का मौका भी हो सकता है। यह मेरे लिए एक चुनौती थी।

सचिको की कहानी के चित्र बनाते समय मुझे अपनी दादी की याद आई, जिन्होंने अपनी जवानी में युद्ध को अनुभव किया था। उन्होंने मुझे खाने-पीने की सामग्री की क़िल्लत और अपने घर के जल कर राख हो जाने, और ज़िन्दा बचे रहने के अपने संघर्ष के बारे में भी बताया था।

मेरी दादी कई सालों पहले गुज़र चुकी हैं। जापान जल्द ही उन तमाम लोगों को खो देगा जिन्होंने युद्ध को अनुभव किया था। तब युद्ध के चश्मदीद गवाह रहेंगे ही नहीं। इसलिए भी परमाणु बम की उत्तरजीवी साचिको की कहानी बेहद महत्वपूर्ण है।

हमारी दुनिया में युद्ध का अस्तित्व आज भी है। हमारे पास परमाणु हथियार भी हैं। युद्ध का अंदेशा भी लोगों और देशों के बीच अविश्वास और विभाजन पैदा करता है।

मैं तहेदिल से उम्मीद करती हूँ कि यह कहानी आप सबको शान्ति के बारे में सोचने को प्रेरित करेगी और साचिको की शान्ति की उम्मीद को भावी पीढ़ियों तक पहुँचा सकेगी।

- आकिरा कुसाका